Rise of Mussolini and Fascism(Part-2)

For : P.G.SEM-II,CC-6,UNIT-2

बेनिटो मुसोलिनी का जन्म 1883 ई. में **रोमानिया** नामक ग्राम के एक समाजवादी लोहार परिवार में हुआ था ।वह बचपन में अपने पिता के क्रांतिकारी समाजवादी विचारों से प्रभावित था ।उसकी माता अध्यापिका थी। सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के बाद मुसोलिनी 18 वर्ष की आयु में अध्यापक बना ।कुछ समय बाद व उच्च शिक्षा प्राप्त करने वह स्विट्जरलैंड चला गया । उसने वहां नित्शे, शोपनयेयर, मैकियावेली और सोरेल के ग्रंथों का अध्ययन किया ।यहां रहते हुए उसने श्रमिकों के संगठन द्वारा हड़तालों को प्रोत्साहन करना शुरू किया ।उग्र विचारों से स्विट्जरलैंड की सरकार घबरा गई और उसने इसको अपने देश से बाहर निकाल दिया ।इसके पश्चात वह इटली वापस आ गया और यहां भी क्रांतिकारी प्रचार करता रहा ।उग्र विचारों के कारण उसे 1908 में कारावास का दंड दिया गया। जब जेल से बाहर निकला तो वह ऑस्ट्रिया के ट्रेंट नामक नगर में चला गया ।वहां इसने ट्रेंट को इटली में मिलाने का आंदोलन का समर्थन किया। उसे ऑस्ट्रिया से निकाल दिया गया ।1912 ई. में वह **अवंती** नामक एक समाजवादी पत्रिका का संपादक हो गया ।उसने राष्ट्रवाद ,साम्राज्यवाद, सैनिक वाद , युद्ध तथा धर्म की आलोचना की ।इस समय उसके विचारों में मार्क्सवाद एवं संघवाद का सम्मिश्रण था।

जब प्रथम विश्वयुद्ध 1914 में प्रारंभ हुआ तो मुसोलिनी ने कहा कि इटली को मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ना चाहिए क्योंकि मुसोलिनी युद्ध के पक्ष में था इसलिए उसे अवंती के संपादक के पद से हटा दिया गया। अपने विचारों के प्रचार के लिए मुसोलिनी ने **पोपोलो डी'इटेलिया** (Popolo d'Italia) नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। 1915 में जब इटली युद्ध में शामिल हो गया तब मुसोलिनी भी सेना में भर्ती हो गया। लड़ाई के दिनों में उसने बड़ी वीरता दिखाई और उसे कॉरपोरल का पद दिया गया । वह युद्ध में घायल हो गया इसलिए 1917 में उसने फौज से अवकाश प्राप्त कर ली। जब वह फौज से वापस आया तो रूस में क्रांति हो चुकी थी ।इटली के कई नेता वैसे ही क्रांति अपने देश में लाना चाहते थे परंतु मुसोलिनी इसका विरोध किया। उसका विचार था कि यदि साम्यवाद को इटली में प्रोत्साहन मिल गया तो वह एक नई गुलामी के नीचे आ जाएगा। प्रथम विश्वयुद्ध

की समाप्ति के बाद पेरिस शांति सम्मेलन में इटली के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया था ।इसका इटली पर बुरा प्रभाव पड़ा ।उस समय मुसोलिनी आगे आया । उसके व्यक्तित्व और भाषण की शैली ने उसे लोकप्रिय बना दिया।

फासिस्ट पार्टी का गठन: फासिस्ट शब्द इटालियन के **फैसियो**(Fascio) शब्द से बना है जिसका अर्थ **वर्ग(Group)** होता है ।सर्वप्रथम फासिस्ट दल की स्थापना मार्च 1919 में वोल्शेविजम के विरोध में हुई थी। मुसोलिनी का कहना था --'**फासिस्ट लोग न पार्टी है ,न पार्टी बनाना चाहते हैं और न पार्टी बन सकते हैं ।वास्तव में फासिज्म पार्टी विरोधी आंदोलन है।**' उसकी पार्टी में अवकाश प्राप्त सैनिक, मजदूर ,समाजवादी, विद्यार्थी जमींदार ,पूंजीपति तथा मध्यम वर्ग के लोग सम्मिलित हो गए ।इस दल के स्वयंसेवक **काली कमीज** पहनते थे। इसलिए वह **काली कुर्ती** नाम से प्रसिद्ध हुए।उनका अपना एक अलग झंडा था ।वे अस्त्र - शस्त्र धारण करते थे ।अनुशासन उनको बहुत प्रिय था। मुसोलिनी उनका प्रधान **कमांडर** (Duce)था।

23 मार्च 1919 ई. को उसने इस पार्टी की मीटिंग **मिलान** में बुलाई। उस बैठक में कुछ समाजवादी और कुछ राष्ट्रवादी सिद्धांतों को अपनाया गया। इसके बाद मुसोलिनी ने देश भर में फासिस्ट गुटों का संगठन प्रारंभ किया । मुसोलिनी के काली कुर्ती दल में 50,000 से अधिक सत्ताधारी सैनिक थे और मुसोलिनी के कहने पर सर्वदा मर मिटने के लिए तैयार रहते थे। अपने दल में राष्ट्रीयता को प्राचीन स्वरूप देने के लिए मुसोलिनी ने रोमन चिन्ह, रोमन परंपराएं और रोमन युद्ध की ललकार और संगीत को अपनाया। धीरे-धीरे इटली के बड़े बड़े नगरों और औद्योगिक केंद्रों में भी फासिस्ट दल स्थापित किए गए ।मुसोलिनी मिलान के फासिस्ट गुट का नेता बना। मुसोलिनी ने साम्यवाद का विरोध किया तथा इटली के लोगों को बतलाया फासिस्ट संस्थाएं ही इटली को समृद्ध और बलवान बना सकती है ।उसके लेखों और भाषणों से अनेक सैनिक, विद्यार्थी ,व्यापारी ,पूंजीपति, व्यवसाई ,उधोगपति प्रभावित हुए ।धीरे धीरे संगठनों की संख्या बढ़ने लगी।

मुसोलिनी ने अपने अनुयायियों को बताया कि सत्ता को हथियाने के दो उपाय थे -एक उपाय चुनाव द्वारा और दूसरा विद्रोह करके। 1921 के चुनाव में फासिस्ट पार्टी के 35 सदस्य विधान सभा के लिए चुने गए। इस उपलब्धि से वह खुश नहीं था इसलिए उन्होंने हिंसा द्वारा राज सत्ता पर अधिकार जमाने का निश्चय किया। मुसोलिनी देश में एक आंदोलन चलवाया (Squandrist Movement) जिसका उद्देश्य आतंक पूर्ण साधनों से विरोधी दलों का विनाश करना था।

फासिस्टों द्वारा रोम पर धावा: अक्टूबर 1922 में नेपल्स में फासिस्ट दल का सम्मेलन हुआ। इसमें 40,000 से अधिक फासिस्ट स्वयंसेवकों ने अस्त्र- शस्त्रों से सुसज्जित होकर भाग लिया। मुसोलिनी ने घोषणा की कि उसकी निम्नलिखित मांगे यदि स्वीकार नहीं की जाती है तो वह स्वयंसेवकों की सहायता से रोम पर चढ़ाई कर देगा. इस चढ़ाई के लिए युद्ध की तिथि 27 अक्टूबर निश्चित की गई। उसने निम्नलिखित मांगे रखी-

1. कैबिनेट में फासिस्ट दल के 5 सदस्यों को सम्मिलित किया जाए
2. नये चुनाव कराने की घोषणा की जाए
3. सरकार विदेश नीति का दृढ़ता से पालन करें
4. आर्थिक सुधारों को यथाशीघ्र क्रियान्वित किया जाए ।इन मांगों के अतिरिक्त मुसोलिनी ने सम्मेलन के खुले अधिवेशन में शासन सत्ता का फासिस्टों को सौंपने की मांग की।

इटली की सरकार ने इन मांगों को अस्वीकार कर दिया फलतः 27 अक्टूबर को मुसोलिनी ने अपने दल के 50,000 स्वंयसेवकों के साथ रोम की ओर बढ़ा। **प्रधानमंत्री फैक्टा** ने गम्भीर स्थिति का सामना करने के लिए **राजा विक्टर इमेनुअल तृतीय** से मार्शल लॉ घोषणा करने की अनुमति मांगी परंतु इसे अस्वीकृत कर दिया गया।अतः 28 अक्टूबर को फैक्टा की सरकार ने त्यागपत्र दे दिया। इटली के राजा ने भली-भांति अनुभव कर लिया था कि मुसोलिनी का सामना करना बेकार है अतः उसने 29 अक्टूबर को मुसोलिनी को नया मंत्रिमंडल बनाने के लिए आमंत्रित किया ।30 अक्टूबर 1922 को मुसोलिनी रोम पहुंचा और उसी दिन उसने नए मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण की ।मुसोलिनी के नए मंत्रिमंडल में 4 मंत्री और 9 उपमंत्री फासिस्ट दल के थे और शेष दक्षिणपंथी ,उदारवादी , पापुलिस्ट, राष्ट्रवादी और सोशल डेमोक्रेटिक दल के थे। मुसोलिनी देश की आंतरिक एवं वाह्य समस्याओं का सामना करने के लिए सदन से 1 वर्ष के लिए शासन के समय शक्तियां प्राप्त कर ली। इस प्रकार रक्त की एक बूंद बहाये बिना ही उसने रोम पर अधिकार कर लिया। उसने **डियाज** को अपने सेना का प्रधान अधिकारी बनाया। मुसोलिनी ने अपने विशेष अधिकारों का प्रयोग करके इटली की प्रशासन व्यवस्था का फासिस्टीकरण करना प्रारंभ किया। प्रांतों के प्रिफेक्ट के पदों तथा पुलिस विभाग एवं अधिकारी तंत्र के प्रमुख पदों पर फासिस्टों की नियुक्तियां की ।एक राष्ट्रीय सेना का गठन किया गया जिसमें फासिस्ट दल के सशस्त्र नवयुवकों को स्थान दिया गया। **इतिहासकार गैथोर्न हार्डी** ने अक्टूबर 1922 की घटना को सबसे अधिक अंतरराष्ट्रीय महत्व का माना है।

मुसोलिनी शासन संचालन के लिए निम्नलिखित अंगों की व्यवस्था की-

1. **मिनिस्ट्री(Ministry)-** इसका संगठन कैबिनेट की भांति किया गया था। मुसोलिनी के समर्थकों को ही इस में स्थान दिया गया था।

2. **ग्रांड कौसिंल आफ फासिस्ट पार्टी**- यह फासिस्ट दल की समिति थी और मुसोलिनी इसका नेता था। दल के प्रमुख 25 व्यक्ति इसके सदस्य थे।
3. **पार्लियामेंट(Parliament)**- इसमें दो सदनों की व्यवस्था की गई ।पहला सदन **सीनेट**(Senate) कहलाता था जिसके सदस्यों को नियुक्ति मुसोलिनी करता था। इसकी सदस्यता आजीवन होती थी। दूसरा सदन **चेंबर ऑफ डिपुटीज**(Chamber of Deputies) कहलाता था ।इसके सदस्यों के नियुक्ति मंत्री मंडल तथा ग्रांड काउंसिल ऑफ फासिस्ट पार्टी द्वारा होती थी।

इस प्रकार शासन की संपूर्ण सत्ता मुसोलिनी के हाथ में आ गई। मुसोलिनी ने प्रधानमंत्री बनते ही राज्य की समस्त सत्ता अपने आप में केंद्रित करने का प्रयत्न किया। उसने निम्नलिखित काम किये-

1. नवंबर 1923 ई. में उसने संसद में एक नया निर्वाचन कानून पास कराया जिसके अनुसार यह व्यवस्था की गई कि सामान्य निर्वाचन में जिस किसी दल को सबसे अधिक मत प्राप्त हो उसे लोकसभा में दो तिहाई स्थान मिले और शेष एक तिहाई बाकी दलों में प्राप्त मतों के अनुपात में विभाजित कर दिया जाए। इसका फायदा अप्रैल 1924 में हुए चुनाव में उसे मिला ।उसे निर्वाचन में 65% मत प्राप्त हुए और लोकसभा में इसका बहुमत हो गया। विरोधी समाजवादी नेता **मेटिओटी** के विरोध को अनसुनी करते हुए गोली से उड़ा दिया गया।
2. सन 1925 के आरंभ में ही मुसोलिनी के हाथ में पूर्ण सत्ता आ गई थी और उसने अपने विरोधी दलों को कुचलने का पूरा प्रयास किया। 1925 में एक कानून पास किया गया जिसके तहत नगरपालिका के सदस्यों का चुनाव बंद कर दिया गया। नगरों में निर्वाचित नगर पालिकाओं के स्थान पर केंद्रीय सरकार द्वारा नियुक्त **पोडेस्टा** (Podesta) नामक अधिकारियों को स्थानीय शासन का कार्य सौंपा गया। गैर फासिस्ट वकीलों से वकालत करने का अधिकार छीन लिया गया।
3. 1926 में इटली के समस्त विरोधी दलों को अवैध घोषित कर दिया ।इसी वर्ष कैबिनेट प्रणाली का अंत कर दिया गया। प्रधानमंत्री संसद के प्रति उत्तरदाई न होकर राजा के प्रति उत्तरदाई था।यह उल्लेखनीय है कि अब राजा के हाथ में कोई वास्तविक सत्ता न रह गई थी। मुसोलिनी जल, थल वायु सेना का सर्वोच्च सेना अध्यक्ष भी था.
4. समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिए गए।
5. 1926 में **सार्वजनिक सुरक्षा कानून** बनाकर व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई। राज्य द्रोहियों को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस को व्यापक अधिकार प्रदान किए गए। गिरफ्तार किए हुए व्यक्तियों को अनिश्चितकाल तक जेल में बंद रखा जा सकता था।
6. फासिस्ट शासन के विरुद्ध षड्यंत्र रचने वालों का पता लगाने के लिए पुलिस की व्यवस्था की गई जिसे ओवेरा कहा जाता था।
7. Oct.1926 मे दल का नया संविधान बना कर शक्तियों का केंद्रीकरण कर दिया गया अब सभी नियुक्तियां ऊपर से आरोपित होने लगी।
8. राजनीतिक अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिए एक विशेष प्रकार के न्यायालयों की स्थापना की गई ।न्यायालयों में जुरी की प्रथा को समाप्त कर दिया गया ।
9. विद्यालयों में फासिस्ट सिद्धांतों के शिक्षा देना अनिवार्य कर दिया गया। विद्यालय के छात्रों को बार-बार यह रटाया जाता था कि -'मुसोलिनी सदा ठीक ही करता है।'
10. 1928 ई. में निर्वाचन के संबंध में एक नया कानून बनाए गए। इसके अनुसार चेंबर ऑफ डेपुटीज के सदस्यों का चुनाव फासिस्ट महापरिषद द्वारा प्रस्तुत 400 नामों की सूची के आधार पर होना था। मतदाताओं को केवल यह अवसर दिया जाता था कि वह इस संपूर्ण सूची के पक्ष या विपक्ष में वोट दे। वैधानिक लोकतंत्र पर उसका यह अंतिम प्रहार था ।लोकतंत्र का स्थान अब फासिस्ट प्रशासन ने ले लिया था।

To be continued..

BY:Arun Kumar Rai
Asst.Professor
P.G.Dept of History
Maharaja College
Ara.

Last modified: 09:09